Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

5. 1857 की सशस्त्र क्रान्ति और बलरामपुर

अविनाश गुप्ता
शोध छात्र
प्राचीन इतिहास संस्कृत एवं पुरातत्व विभाग
महाराजा सुहेलदेव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

सारांश

बलरामपुर जिले की धरती ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक साहसी और प्रेरणादायक भूमिका निभाई। जहाँ एक ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलने वाले अहिंसक आंदोलनों ने आज़ादी की अलख जगाई, वहीं दूसरी ओर क्रांतिकारी मार्ग को अपनाने वाले वीरों ने भी अपने प्राणों की आहुति देकर देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने में योगदान दिया।

स्वराज्य भिक्षु, केशवराम शुक्ल, जगन्नाथ मिश्र, जगदम्बिका सिंह, ठाकुर नौरंग सिंह जैसे अनेक सेनानियों ने बलरामपुर और गोंडा जैसे क्षेत्रों में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष एवं संगठनात्मक कार्यवाहियों का संचालन किया। बलरामपुर में एचएसआरए और फारवर्ड ब्लॉक जैसे क्रांतिकारी संगठनों का सक्रिय नेटवर्क था, जहां से योजनाएं बनती और क्रियान्वित होती थीं। इन आंदोलनों में महिलाओं, किसानों, मजदूरों और विद्यार्थियों तक की भागीदारी रही।

भारत छोड़ो आंदोलन, नमक सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में बलरामपुर के सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों को जेल की सजा हुई, जुर्माने झेलने पड़े, और कईयों ने अपने प्राण भी न्योछावर कर दिए। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आज़ाद हिन्द फौज से भी बलरामपुर के कई नवयुवक जुड़कर सशस्त्र क्रांति में सहभागी बने।

बलरामपुर के सेनानियों की जीवनी यह सिद्ध करती है कि यह क्षेत्र क्रांतिकारी चेतना, राजनीतिक सक्रियता और त्याग की भावना से परिपूर्ण था। यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों ने केवल आंदोलनों में भाग लेकर नहीं, बल्कि समाज

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

सुधार, संगठन निर्माण और स्वतंत्र भारत के निर्माण में भी योगदान दिया। इनका जीवन, त्याग और संघर्ष आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

मुख्य शब्द- बलरामपुर, स्वतंत्रता संग्राम, क्रांतिकारी आंदोलन, स्वराज्य भिक्षु, आज़ाद हिन्द फौज

प्रस्तावना

अहिंसक आंदोलनों से स्वतंत्रता प्राप्ति संघर्ष करने वाले देशभक्तों समानान्तर देश में एक विशाल समूह ऐसे दीवानों को अमर कर आया जो प्राण हथेली पर लेकर अंग्रेजी सरकार की सशस्त्र क्रान्ति द्वारा विफल कर देने पर कटिबद्ध था। गोण्डा जिले में क्रान्ति का बिंगुल फूंकने वाला इटावा निवासी श्री स्वराज्य भिक्षु थे। वे पहिले कर्नलगंज उतरे और घर-घर अलख जगाते हुए उन्होंने पूरे गोण्डा जिले का दौरा किया। वे अपने जोशीले भाषण के प्रारंभ और अन्त में एक गीत गाया करते थे। मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे। शरीर न. रहे न ये साज रहे। यह हिन्द मेरा आजाद रहे। मेरी माता के सर पर ताज रहे। इन इन्कलावी गीत और सरकार विरोधी गतिविधियों के कारण स्वराज्य भिक्षु पहली बार कर्नलगंज, दूसरी बार गोण्डा और तीसरी बार बलरामपुर से गिरफ्तार कर जेल भेजे गये हर बार जेल से छूटने पर ये नूतन उत्साह से अपने मिशन में जुट जाते थे। इन्होने बनकटवा, गोण्डा में एक यूनियन कायम कर मजदूरों की बीच काम करना शुरू किया। बाहरी तौर पर यूनियन का दिखावा मजदूरों के ही हितों के लिए कार्य करना था। परन्तु वास्तव में स्थिति कुछ और थी। यूनियन का कार्यालय पूर्वी क्षेत्र के क्रान्तिकारियों का एक प्रमुख मिलन स्थल था। विभिन्न क्षेत्रों के क्रान्तिकारी यहां एकत्र होकर विचार विनियम करते, अपनी योजना में निर्धारित करते थे। उक्त यूनियन का कार्यालय वस्तुतः एच०एस०आर०ए० हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का एक प्रमुख केन्द्र था। गोण्डा जिले में आर०एस०पी० के छः सदस्य श्री चंद्रभान शरण सिंह श्री श्यामलाल सिंह, सिधौटी श्री केशवरामशुक्ल, श्री जगन्नाथ मिश्र, श्री संगमलाल पाण्डेय और बंशराजसिंह बलरामपुर, श्री केशवराम का मकान एच०एस०आर० ए० का केन्द्र था जहां गुप्त गतिविधियों चलती थी। षडयंत्र की महत्वपूर्ण योजनायें इतनी गुप्त रहती थी कि सभी सदस्यों तक को उनकी जानकारी नहीं हो पाती थी।

उदाहरण के लिए वर्ष 1937 में पिपरी डीह कांड जिसमें ट्रेन डकैती के लिए बलरामपुर के श्री केशवराम शुक्ल और श्री जगन्नाथ मिश्र को तैनात किया गया था। जिसकी जानकारी गोण्डा के अन्य आर०एस०पी०

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

क्रान्तिकारियों तक को नहीं दी गयी थी। सशस्त्र क्रान्ति में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में गठित आजाद हिन्द फौज के सैनिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। देश के नवयुवक जो ब्रिटिश सेना में भर्ती हुए थे। उन्हें जर्मनी से युद्ध के लिए तैयार किया गया था। अचानक सिमांपुर में जपानी फौज द्वारा आक्रमण कर दिये जाने से उनको जापानियों से मोर्चा लेने के लिए सिंगापुर भेजा गया। सुभाषचन्द्र बोस के ओजस्वी भाषणों ने इस भारतीय सैनिकों में विचार बदल दिये। उनके मन में यह बात बैठ गयी कि अंग्रेजों की गुलामी में रहकर उनके लिए युद्ध में प्राण देने की अपेक्षा आजाद हिन्द की फौज में शामिल होकर देश की आजादी के लिए कुर्बानी देना बेहतर है। ऐसी भावना से तमाम सैनिक नेता जी के आवाहन पर आजाद हिन्द फौज सेना के झण्डे के तले आ गये और देश भक्ति की शपथ लेकर ब्रिटिश सेना के विरुद्ध बहादूरी के साथ मोर्चा लेने लगे। सशस्त्र क्रान्ति आन्दोलन में भी बलरामपुर पीछे नहीं रहा है। यह शोध आलेख बलरामपुर के क्रांतिवीरों के संदर्भो पर केन्द्रित है।

बलरामपुर और आसपास के क्रांत्रिवीरों की गाथा

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री चन्द्रशेखर आजाद ने फैजाबाद मण्डल का क्रान्तिकारी संगठन का कार्य श्री वृजनन्दन ब्रम्हचारी को सौपा था। ब्रहमचारी जी ने बलरामपुर को अपने गुप्तकार्य स्थल का केन्द्र बनाया था। श्री संगमलाल पाण्डेय मो० पूरब टोला, कर घर क्रान्तिकारियों का मिलन स्थल था जहां विचार विमर्श होता और नयी पर प्रसिद्ध काकोरी काण्ड के ढ़ंग पर बनायी जाती थी इसका पता लगने पर प्रसिद्ध क्रान्तिकारी पं० केशव रामशुक्ल और जगन्नाथ मिश्र पकड़ लिये गये तथा उन्हें दस वर्ष की सजा दी गयी थी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के द्वारा गठित आजादहिन्द फौज के अतिरिक्त उनका एक और संगठन फारवर्ड ब्लाके के नाम से था इस पार्टी के कार्य में भी बलरामपुर अग्रणी रहा। नेताजी ने लहिया ग्राम को फारवर्ड ब्लाक की जिला मुख्यालय बना दिया था जहां इस अग्रगामी दल के बहादुर सैनानी अपने कार्यक्रम बनाते और गोपनीय ढंग से उस क्रियानवत करते थे इस गांव के एक ही घर के तीन क्षत्रिय युवकों जगदम्बिका सिंह उर्फ बड़कऊ सिंह हरदेव सिंह उर्फ ननकऊ सिंह रक्षपाल सिंह तथा इनके दो असामियों रामतेज और जगराम नाई ने अपने साहसिक कार्यों से जिला प्रशासन को झकझोर दिया था। सारांश यह है कि देश की स्वतंत्रता के लिए जितने भी आन्दोलन छेड़े गये, चाहे वे हिंसक हो अथवा क्रान्तिकारी, महात्मागांधी के नेतृत्व में चलाये गये। हो अथवा सुभाष चन्द्र बोस या चन्द्र शेखर आजाद के

निर्देशन में बलरामपुर सभी में आगे रहा और जिले के अन्य सेनानियों के लिए इसको एक प्रेरणादायक भूमिका प्रस्तुत की।

बलरामपुर तहसील के स्वतन्त्रता सेनानी आजाद हिन्द फौज में बलरामपुर नगर के दो सैनिक अब्दुल करीम खां तथा अब्दुल रहीम था। ये दोनों सगे भाई अब्दील गनी खां के मौसेरे भाई थे। जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है। आजाद हिन्द सैनिकों की सार्वजनिक रिहाई के बाद जेल से छूटकर इस दोनों भाईयों के बलरामपुर में डाक्टरी प्रतिक्रिया शुरू की। ये दोनों सेनानी अब दिवंगत हो चुके हैं। श्री कृष्णानन्द श्री कृष्णानन्द आत्मज दातादीन बलरामपुर गोण्डा के निवासी है। आपने साविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान सन 1932 में 20 रू. जुर्माना सहित 6 माह की सजा पायी थी। श्री केशवराम शुक्ल श्री केशवराम शुक्ल अत्यन्त सुगठित शरीर, उत्तम सूझबूझ और दृढ़ निश्चय के धनी थे। उनके पिता रामउदित शुक्ल का घर बलरामपुर नगर के खलवा मोहल्ले में था, जो उन दिनों क्रान्तिकारियों का मिलन स्थल बन गय संगठन ने ट्रेन डकती के लिए इन्हें नियुक्त किया था। पिपरी डीह भटनी से औडिहार होकर बनारस जाने वाली लाइन पर मऊ से कि०मी० पर स्थिति गाजीपुर जिले के अन्तर्गत एक छोटा सा रेलवे स्टेशन है। क्रान्तिकारियों ने माउजर, पिस्टल खरीदने के लिए गवर्नमेंट का खजाना लूटने का निश्चय कर इस स्टेशन के पास ट्रेन रोक कर लूटपाट की। इस काण्ड में आजमगढ़ के मुक्तिनाथ उपाध्याय झारखण्डे राय, बलरामपुर के केशवराम शुक्ल तथा जगन्नाथ प्रसाद मिश्र प्रमुख थे। एक व्यक्ति की मुखबिरी से पिपरी डीह के अभियुक्त पकड़ लिये गये और डकैती के जुर्म मे उपर्युक्त चारों व्यक्तिक्रान्तिकारियों को 18 दिसम्बर 1939 को दस दस वर्ष की कठोर कारावास की सजा दी गयी। बाद में उ0प्र0 में फिर से अंतरिम कांग्रेसो मन्त्रिमण्डल बनने पर ये अभियुक्त 1945 में रिहा कर दिये गये। श्री केशवराम शुक्ल ने जेल से छूटने पर बलरामपुर राज्य में उखड़ा आंदोलन चलाया बेदखल किये गये तथा भूमिहीन किसान मजदूरों के ये एकछत्र नेता थे।

साहस और निर्भीकता इनके अन्दर कूट कर भरी थी। प्रबल जनाधार और इनकी दबंग प्रवृति से सह में हुए कुछ कांग्रेसी कार्य कर्ताओं के हृदय में इनके प्रति ईष्र्या द्वेष की भावना तेजी से आयी। 16 फरवरी 1950 को केशवराम शुक्ल जबतुलसीपुर स्थित देवीपाटन से एक कि०मी० उत्तरस्थित नयी देवी मन्दिर में सोये हुए थे कुछ व्यक्यिों ने आक्रमण कर इन्हें गोलियों से भून डाला। नयी देवी के मन्दिर की महंथिन की कर्मचारी थे। महावीर प्रसाद

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

जी उस जमीन पर कब्जा करने के लिए नयी देवी मन्दिर गये हुए थे। इस हत्याकांण्ड में चार अभियुक्त गिरफ्तार हुए कारण वरी कर दिये गये। बलरामपुर तुलसी पार्क पर स्व० शुक्ल की वार्षिकी पर रेवेन्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी की प्रान्तीय बैठक की गयी की जिसकी अध्यक्षता दादा योगेश चन्द्र चटर्जी ने की थी। उसी दिन कुछ मतभेदों के कारण झारखण्डे राय ने यू०पी० आर० एस० पी० नाम से एक अलग संगठन गठित करने की घोषणा की, जो आगे चलकर सी०पी०आई० में विलय कर गयी। श्री कैलाशनाथ श्री कैलाशनाथ आत्मज महादेव प्रसाद मुहल्ला बलुआ बलरामपुर के निवासी हैं। आपके व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के दौरान सन 1941 में 18 मास कैद तथा 20रू जुर्माने की सजा पायी थी। श्री गंगा प्रसाद उर्फ गूठे श्री गंगा प्रसाद उर्फ गूठे आत्मज भगवती प्रसाद मोहल्ला पुरे नियाताल बलरामपुर के निवासी है। आपके सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सन 1930 में एक मास कैद 12 वेत तथा 20 जुर्माने की सजा पायी थी। इसी आंदोलन के सिलसिले में 1932 और 1933 मे भी इन्हें 6-5 माह की कड़ी कैद की सजा मिली थी। व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के दौराan इन्हें सन 1941 ई0 में 10 मास कैद की सजा मिली थी। ये भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 1942 में 2 मास नजर बंद है। श्री गंजाघर पाण्डेय श्री गंजाधर आत्मज शम्भुदत्त पाण्डेय ग्राम चकवा थाना बलरामपुर निवासी है। अपने व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के दौरान सन 1941 में 6मास कैद तथा 20 रूपये जुर्माने की सजा पायी थी। श्री चिनकू दास श्री चिनकू दास आत्मज श्री सूरज बली कोरी, ग्राम बैरही दुल्लापुर बलरामपुर के निवासी है। आपने व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के दौरान 1941 में 9 मास कैद तथा 10 रू0 जुर्माने की सजा पायी थी।

श्री जगदम्बिका सिंह भगौतीगंज खगईजोत मार्ग पर 8 कि०मी० दूर स्थित झलहियाऽ ग्राम स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों का इस जनपद में मुख्य केन्द्र बन गया था। इस गांव की स्थिति भी राजनीतिक क्रान्तिकारी की गतिविधियों के लिए उपयुक्त थी। किसी सड़क से जुड़ा न होन के कारण यह उन दिनों आकस्मिक छापों से निरापद था तो नगर से निकट होने के कारण त्वरित संचार की दृष्टि से नितांत उपयुक्त थी। क्षेत्र के भू स्वामी बिसेन क्षत्रिय ठा०रामप्रकाश सिंह दबंग स्वभाव के थे। बलरामपुर राजवंश से नातेदारी के कारण भी सम्मान और निर्भयता उन्हें सहज ही प्राप्त थी ठाकुर रामप्रकाश सिंह के तीन पुत्रों में से ज्येष्ठ श्री जगदम्बिका सिंह उर्फ बड़कऊ सिंह का जन्म सन 1909 ई0 में हुआ था। इनके अनुज ननकऊ सिंह इनसे 7 साल छोटे है। श्री बडकऊ सिंह के बहन का विवाह

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गोण्डा के कलहंस रियासत शाहपुर के राजा श्री नागेश्वर बख्शसिंह के साथ हुआ था। उनकी मृत्यु के बाद ये अपनी अवयस्क भानजी के संरक्षक नियुक्त हुए। अतः इन्हें प्रायः शाहपुर रहना पड़ता था। इन्हीं दिनों राज परिवार की नातेदारों के कारण इनका परिचय कलाकाकर के बिसेन राजा अवधेस प्रताप सिंह से हुआ जो देश के अग्रणीय स्वतंत्रता सेना नायकों में से थे। श्री जगदम्बिका सिंह जब सन 1932 में 4 मास की कड़ी सजा काटकर घर आये और उस समय पिता जी बीमार थे। घर में दवा दारू लाने वाला नही था श्री रामेश्वर दत्तसिंह कोबलरामपुर राज के मैनेजर मिस्टर बेटस और थाना अध्यक्ष श्री अयोध्या प्रसाद फौज में भर्ती कराने का प्रलोभन दे कर घर से दूर पहुचा दिया था भाई हरिदेव सिंह भी जेल में थे। इसी बीच पहले हरदेव सिंह की फिर जगदम्बिका सिंह की पत्नी का समुचित उपचार के अभाव में मृत्यु हो गई। परिवार की तीन तीन मौतो और घरकी उजाड कर गई गृहस्थी भी इन देश भक्तों को पथ से विचलित न कर सकी। श्री जगदम्बिका सिंह अपने पैतृक ग्राम लहिया में एक रहे है उनकी बलिष्ट काया और गर्व उन्नत मूछें आज भी बुढ़ौती को चुनौती दे रही है। श्री जगन्नाथ प्रसाद उपाध्याय श्री जगन्नाथ प्रसाद उपाध्याय पुत्र श्री महावीर प्रसाद उपाध्याय बलरामपुर नगर से पूरब बेलहा चरनगहिया गांव के निवासी थे। आपका जन्म 1918 में एक ऐतिहासिक कुल में हुआ था आपके पूर्वज श्री बेचू उपाध्याय और उनके भाई शेखर उपाध्याय बलरामपुर राजा के पूर्वजों की भाँति फिरोज तुगलक के साथ पावागंढ गुजरात से इस क्षेत्र में आये थे। फिरोज तुगलक ने आपको गोण्डा बहराइच क्षेत्र में स्वतंत्र भूभाग जागीर स्वरूप प्रदान किया। बेचू उपाध्याय का विवाह नही हुआ था वे युद्ध में निःशन्तान मरे और शेखर उपाध्याय ने वर्तमान इक्हत्तर इलाके में शेखरपुर नामक गांवबसा कर अपने तालुके का मुख्यालय स्थापित किया। बलरामपुर राजवंश के आपके पूर्वजों के सदैव मैत्री पूर्ण संबंध रहे। श्री जगननाथ उपाध्याय के परनाना श्री रामानन्द प्रसाद तिवारी तुलसीपुर के राजा दृगनारायण सिंह के यहां नायब थे।

तुलसीपुर की ईश्वरी देवी

सन 1885 में आपने तुलसीपुर की रानी ईश्वरी देवी राजेश्वरी देवों के साथ अंग्रेजो के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था और उन्हीं के साथ नेपाल चले गये थे। रू नायब श्री रामानन्द तिवारी का किला नुमा महल पचपेडवा से कि०मी० पर रामनगर गांव में था जो चारो ओर खाई से घिरा था। उनका बनवाया ठाकुर द्वारा अभी मौजूद है। उनकी गढ़ी अंग्रेजो के द्वारा ध्वस्त कर दी गयी थी। रामानन्द के अभी बस्ती जनपद के कपिया गांव में है। बलरामपुर के राजा

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

नेवल सिंह के समय तत्कालीन नवाब अवध के नाजिम अहमद अली से भयंकर युद्ध हुआ। बलरामपुर की सेना का नेतृत्व राजा नेवल सिंह के बड़े पुत्र युवराज बहादुर सिंह कर रहे थे। उनकी सहयोगी सेना का नेतृत्व कर कर रहे थे राजा शिवदीन उपाध्याय उस युद्ध में राजा शिवदीन उपाध्याय और युवराज कुँवर बहादुर सिंह दोनों वीरगति को प्राप्त हुए थे। यद्यपि जीत बलरामपुर की ही हुई थी। राजा नेवल सिंह ने कृतज्ञता स्वरूप राजा शिवदीन उपाध्याय के पुत्र दयाराम उपाध्याय को दो हजार बीघा जमीन मरघट के रूप में प्रदान की थी दयाराम के रामदयाल और उनके पुत्र गया प्रसाद उपाध्याय हुए। गया प्रसाद के ज्येष्ठ पुत्र महावीर प्रसाद उपाध्याय के पुत्र छः हुए सर्व श्री शीमाराम जगतराम, सन्तराम जगन्नाथ प्रसाद तुलाराम तथा श्याम सुन्दर उपाध्याय।

श्री जगन्नाथ प्रसाद उपाध्याय ने मिडिल स्कूल परीक्षा को पास कर मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की। सन 1935 में आप मखनहां गांव के कर्मठ सेनानी ठाकुर रघुनन्दन सिंह तथा जनपद के अग्रणी सेनानी बाबू ईश्वर शरण के सम्पर्क में आये और कांग्रेस के आंदोलन में काम करने लगे। अपकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर बाबू ईश्वर शरण ठा० नवरंग सिंह आदि प्रमखु नेताओं ने 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन की गति देने के लिए आपको गोण्डा जनपद का संयोजक बनाया उस आंदोलन में आप भी गिरफ्तार हुए और 10 साल की कड़ी कैद काटने तथा 25 रू जुर्माना देने के बाद छूटे। सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय आप मलेरिया से गम्भीर रूप से अस्वस्थ्य हो गये। किन्तु इनके नाम वारण्ट जारी हो चुका था। बलरामपुर थाना के प्रभारी श्री अयोध्या प्रसाद इनकी सिद्धान्त निष्ठा से प्रभावित थे। उस समय बलरामपुर राजकोर्ट आफ वार्डस के प्रबंध में था। अंग्रेज कमिश्नर मि0 बेस राज का प्रबंधक और मजिस्टेट था। श्री अयोध्या प्रसाद ने उससे श्री उपाध्याय की बीमारी देखते हुए घर पर ही नजरबंद करने की अनुमति लेली और निगरानी के लिए वहां दो सिपाहियों की ड्यूटी लगा दी सन 1943 में नजरबंदी हटा ली गयी और ये स्वस्थ्य होकर पुनः राष्ट्रीय कार्य कलापों में जुट गये। श्री जगन्नाथ प्रसाद उपाध याय के जिले में हल जौतो संगठन बनाया था। उस समय हल की मूठ पकडना ब्रहमण क्षत्रियों के लिए छूत माना जाता था। अतः इस कुरीति को तोड़ने के लिए बलरामपुर के सम्भ्रान्त जमींदार डा० हरनाम सिंह ने स्वयं हल चलाया मनकापुर के राजा राघवेन्द्र प्रताप सिंह गोण्डा तहसील कांग्रेस भावना को मिटाने की पहल की। सन 1942 तक इस क्षेत्र में गन्ना उत्पादकों का

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

कोई भी प्रभावी संगठन नहीं बनाया था। अतः मिल मालिकों के मनमाने शोषण से बचाने के लिए आपने ईख संघ बनाया और किसानों के हितों के लिए किसान संघ की स्थापना की। श्री उपाध्याय ने विवाह नही किया था।

मई 1949 को आपका देहान्त हो गया आपके सबसे छोटे भाई श्री श्यामसुन्दर उपाध्याय जीवित है वे बलरामपुर डी०ए०बी०इण्टर कालेज से सेवानिवृत हुए है और सम्प्रति नई बस्ती बलरामपुर में अपने मकान में रह रहे है। श्री जगन्नाथ प्रसाद के बड़े भाई श्री संतराम उपाध्याय भी अविवाहित था वे कांग्रेस के निष्ठावान सिपाही सामजिक कार्यकर्ता तथा बड़े ही तेजस्वी पुरुष थे। उनका देहावसान हैजे की बीमारी से 1948 में हो गया। श्री जगराम सिलहिया ग्राम के ही श्री जगराम पुत्र दयाल 1930 से 1942 तक सभी राष्ट्रीय आंदोलनों में जगदम्बिका सिंह के साथ डटे रहे। इन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के समय 1941 में 6 मास की कैद और 20रू जुर्माने की सजा हुई थी। श्री जगन्नाथ प्रसाद तिवारी श्री जगन्नाथ प्रसाद तिवारी पुत्र हरिहर दत्त तिवारी ग्राम चकवा पो० देवरिया तहसील बलरामपुर के निवासी है। सन 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिलसिले में आपको भारत सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत के अन्तर्गत नौ मास की कैद और पचीस रूपये जुर्माने की सजा मिली थी। 18 अगस्त 1990 को आपका देहावसान हो चुका है। आपकी पत्नी श्रीमती लखपता जो कुछ वर्षों से नेत्र ज्योति खो चुकी है, सेनानी पेंशन प्राप्तकर रही है। श्री जसबन्त लाल श्रीवास्तव श्री जसबन्त लाल श्रीवास्तव आत्मज लालबिहारी लाल श्री वास्तव बलरामपुर नगर के निवासी है। इनके बड़े भाई नन्द किशोर लाल 1930 ई0 में कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। उनकी प्रेरणा से 1935 में ये भी कांग्रेस में शामिल हुए और क्रियाशील सदस्य रहे। सन 1942 ई० में इन्हें दो मास की सजा गोण्डा जेल में काटनी पड़ी। श्री ठाकुर प्रसाद आत्मज जगन्नाथ बलरामपुर के निवासी है। आपने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सन 1942 में 6मास कैद की सजा पायी। श्री तेजपाल श्री तेजपाल पुत्र पं० हरपाल झरमहिया ग्राम के निवासी और बड़े ही सुगठित शरीर के ब्रहमण युवक थे। कण्ठ में जैसे मिश्री थी। जेल जीवन में जब यह किशोर देशभक्त का यह तराना चुनरी रंग दे रंगरेजवा पक्की लाल रंग में सुनता था तो श्रोतओं की भुजाएं फड़क उठती थी। व्यक्तिगत सत्याग्रह में इस अवयस्क किशोर को 1941 में 9 मास का कठोर कारावास तथा 10/- रू0 जुर्माने की सजा मिली थी। रामतेज अवयस्क होने के नाते गोण्डा जेल में से बस्ती जेल में भेज दिये गये। वहां के भोजन ने इनका शरीर गला दिया इससे इस शोरेदिल नवयुवक का स्वातेन्त्रय सूर्योदय के पूर्व ही देहान्त हो गया।

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

श्री देव शंकर अवस्थी आत्मज शिवनन्दन प्रसाद जी का जन्म रायबरेली के मउगर्वी गांव में बिक्रम सम्वत् 1975 में हुआ था। रायबरेली से संस्कृत की प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में व्याकरण शास्त्री की उपाधि प्राप्त की फिर आयुर्वेद विद्यालय, कानपुर से आयुर्वेदाचार्य बने। 1940 में व्यवसाय की खोज में ये बलरामपुर आकर रहने लगे इन्हें 1942 में 2माह के कठोर कारावास की सजा हुई। श्री देवेन्द्र कुमार अवस्थी श्रही देवेन्द्र कुमार अवस्थी श्री देवशंकर अवस्थी सगे भाई थे। दोनो भाई बलरामपुर नगर के टेढ़ी मोहल्ले में रहते थे। अपने भाई के साथ-साथ अपने भी स्वाधीनता की लड़ाई में आगे बढ़कर काम किया 1942 में भारत छोडो आंदोलन के दौरान 6 मास की कड़ी कैद और 100 रूपये का जुर्माना की सजा पायी। इससे पहले भी अपने को 2 मास नजर बंदी तक की सजा भुगती थी। श्री नत्था बारी श्री नत्था बारी आत्मज श्री छेदीबारी बलरामपुर के निवासी है आपने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1952 में 6मास की कैद और 50 रू जुर्माना की सजा पायी। श्री नन्द किशोर श्री नन्द किशोर आत्मज श्री लालबिहारी मोहल्ला खलवा बलरामपुर निवासी है। आप सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया और 1932 में 20 रू जुर्माना सहित 6मास कैद की सजा पायी। इस आंदोलन के सिलसिले में इन्होंने 1934 में पनुः 6मास का कैद तथा 30 रू जुर्माने की सजा पायी। श्री परसादी आत्मज घिराऊ बलरामपुर के निवासी है। आपने नमक सत्याग्रह आंदोलन के दौरान सन 1930 में 6मास कैद और 100 जुर्माना की सजा पायी। ठाकुर नौरंग सिंह ठाकुर नौरंग सिंह का जन्म सन 1908 में ग्राम बसालतपुर निकट इतियों थोक के निवासी बिसेन क्षत्रिये ठाकुर विजय राज सिंह के यहां हुआ था। घर की आर्थिक स्थिति साधारण थी। अतः नौरंग सिंह से गांव की प्राथमिक पाठशाला में शिक्षा प्राप्त कर खेती के काम में पिता की सहायता करने लगे। जालियां वाला बाग हत्याकाण्ड के पश्चात सर्वत्र ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति रोष उभरा। स्वतंत्रता प्रेमी मैदान में उतर आये।

महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन का प्रभाव ठाकुर विजय राय सिंह पर भी पड़ा। उनके अन्दर स्वदेश भक्ति की भावना जागृत हुई। मिल के वस्त्रों का परित्याग करके खददर पहनने लगे। पिता के आचरण व्यवहार तथा उपदेश ने नौरंग सिंहको भी देशभक्ति के रंग में रंग दिया। सन 1929 में महात्मा गांधी के गोण्डा आगमन पर बडा अच्छा प्रभाव लोगों पर पड़ा। जिले के अनेक नवयुवकों ने देश के लिए सर्वस्व त्याग करने का संकल्प लिया। और इसमें ठाकुर नौरंग सिंह अग्रणी थे। ये बाबू ईश्वर शरण तथा श्री लाल बिहारी टण्डन के सम्पर्क में आये उनके

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

सम्पर्क से इन्हें बड़ी प्रेरणा मिली। ये पूरीलगन और उत्साह के साथ कांग्रेस संगठन और देश सेवा के कार्य मे गये। सन 1931 में ये मण्डल कांग्रेस इंटिया थोक के जुट. अध्यक्ष हो गये। जनपद में सर्वाधिक सदस्य बनाने के उपलक्ष्य में इन्हें गोण्डा कांग्रेस कमेटी ने विशिष्ट पदक प्रदान कर इनकी कर्मठता का सम्मान दिया। सन 1933 में कलकत्ते में अखिल भारतीय कांग्रेस की गुप्त मीटिंग होने वाली थी। सरकार ने कांग्रेस को अवैधनिक घोषितकर दिया था। अतएव मीटिंग में भेजे जाने वाले प्रतिनिधि के चयन करने में इस बात का विशेष ध्यान रखना पड़ता था कि वह अपने विवेक से विषयम परिस्थितियों का सामना कर सके। गोण्डा के कांग्रेसी कार्यकर्ता ठाकुर नारंगसिंह सूझबूझ और निर्भीकता से बहुत प्रभावित थे।

अतः सर्वसम्मति से इन्हें भेजने का निश्चय हुआ। ठाकुर नौरंग सिंह दो अन्य कर्मठ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के ठाकुर बलदेव सिंह और ठाकुर महादेव सिंह खजुरी के साथ वेश बदलकर दुपलिया टोपी धारण कर बैठक में सम्मिलित होने के लिये गये। कलकत्ता कांग्रेस में जाने पर इनको भारीसंकट का सामना करना पड़ा। कलकत्ता में काली घाट धर्मशाले में ये उत्तर प्रदेश के अन्य कार्यकताओंके साथ पकड लिये गये। अंग्रेजी साजेण्ट के डण्डे बरसाने से इनका एक दाँत टूट गया। अस्पताल में चिकित्सा के पश्चात इन्हें अलीपुर सेन्ट्रल जेल में रखा गया। एक वर्ष तक नजरबंद रखने के पश्चात ये वहां से रिहा किये गये। गोण्डा वापस आपने आने पर ये कांग्रेस कार्यक्रमों में अपना पूरा समय देने लगे संगठन शक्ति, स्पष्हटवादिता, दृढ़ संकल्प, अदम्य साहब आदि गुणों के द्वारा शीघ्र ही ये कांग्रेस कार्यकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति में आ गये। इनकी वक्तृता शैलक, सजीव, प्रभावशालिनी तथा सहज ही लोगों को आकृष्ट कर लेने में सदाम थीम ये नियमितरूप से चरखा चलाते तथा कांग्रेस के सिद्धान्तों का प्रचार करते थे। इन्होंने गांवों तथा नगरों का दौरा करके अनेक स्वयं सेवकों को कठिनतम आंदोलनो के लिए तैयार कर लिया सन 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में इन्हें एक साल की कैद और 50/- रूपये की जुर्माना की सजा मिली। 9 अगस्त 1942 को नौरंगसिंह की गिरफ्तारी के लिए गर्वनर का वारण्ट जारी हुआ ये फरार हो गये तथा एक मास तक लापता रहें इसी बीच ये बंदी बनाये गये। उस दशा में ये अन्य कार्यकर्ताओं के परिवार की सहायता साँतावना देते रहे। एक मास के बाद पकड़े गये और गोण्डा जेल में बन्द कर दिये गये। दो वर्षों तक कठोर यातना सहने के पश्चात 1944 में ये छूटकर आये और दूने उत्साह से कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में अग्रणी रहकर जिले में संगठन कार्य को सुदृढ़ बनाया।

सन् 1956 ई. में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अध्यक्ष पद के लिए पुनः चुनाव हुआ। कुँवर मदन माहन सिंह धनावा राज कांग्रेस के प्रत्याशी थे। उनके विरोध में आपने स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा तथा शानदार विजय पायी। सन् 1957 के अन्त तक ये गोण्डा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन रहे। आपके 9 वर्ष के कार्यकाल मे गोण्डा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने उल्लेखनीय प्रगति की इनका कार्यकाल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड गोण्डा काल माना जाता है सन् 1958 में ठाकुर नौरंगसिंह ने प्रथम स्वाधीनता संग्राम के सेनानी राजा देवीबख्शसिंह की स्मृति में शताब्दी में राजा साहब के जगतमोहन महल के खण्डहरों पर कांग्रेस भवन का निर्माण कराया। इस दिशा में ठाकुर बलदेव सिंह का भी प्रयास सराहनीय रहा। सन् 1948 में सरकार ने प्रदेश के सभी डिस्ट्रिक्ट बोडों को समाप्त कर दिया। 5ठाकुर नौरंगसिंह की कांग्रेस के रचनात्मक कार्य में गहरी दिलचस्पी थी। ग्राम सुधार के कार्यक्रमों में ये सदैव आगे रहते थे। भूदानी नाते सन्त विनोबा से आप बहुत प्रभावित रहे। उनकी प्रेरणा से ये दो वर्षों तक लगातार सर्वोदय के कार्य में लगे रहे। श्री विनाबाजी तथा बाबा राघवदास के साथ आपने पूरे जिले की पदयात्रा की। भूदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत आपने दस हजार एकड़ भूमि प्राप्तं करके भुमिहीनों में बांटा। आपकी पदयात्रा का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा इससे ख्याति तो मिली ही उसके साथ अपको पूरे जनपद की वास्तविक स्थिति तथा समस्याओं को जानने समझने का व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिला। सन् 1958 में आप विधान परिषद के सदस्य चुने गये इसमें दो साल का समय शेष ही था कि त्यागपत्र देकर स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में 1962 में विधान परिषद का चुनाव लड़ा और विजयी हुए। सन् 1967 तकआप एम.एल.ए. रहे। 1967 में पुनः एम.एल.ए. के प्रत्याशी रहे परन्तु असफल रहे। सन् 1969 के चुनाव में आप खड़े ही नहीं हुए। इस समय प्रदेश कांग्रेस के दो वर्ष बीत चुके थे। प्रदेश में संगठन कांग्रेस का प्रभाव था। श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्यमंत्री थे। गोण्डा में कांग्रेसी एम.एल.ए. पुरानी कांग्रेस के ही सामर्थक थे।

इसी वर्ष 14 जनवरी को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी गोण्डा आयी और वे पुलिस लाइन के परेड ग्राउण्ड पर हेलकाप्टर से उतरी और कार से समीपस्थ निरीक्षण भवन को गयी। वहां उनके लिए स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ भोज का आयोजन यिका गया उस समय गोण्डा का एक भी एम.एल.ए. अथवा एमपी उनके स्वागत में सम्मिलित नहीं हुआ। क्योंकि उन्हें भय था कि कही गुप्ता जी नाराज न हो जाये। प्रधानमंत्री का स्वागत का बड़ा ही उत्तम प्रबंध नौरंगसिंह जो तत्कालीन इंदिरा वादी कांग्रेस के जिलाअध्यक्ष ने किया। श्री देवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी सिंह

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

लल्लन श्री मतीगांधी जी के साथ थे। उनके साथ श्री कमलापति त्रिपाठी तथा श्री बहुगणा भी थे। प्रधानमंत्री को जनपद की स्थिति से ठाकुर नौरंग सिंह लल्लन साहब तथा त्रिपाठी जी ने अवगत कराया। सन 1969 से ही आप नयी कांग्रेस के जिला अध्यक्ष बने। संगठन कांग्रेस का पतन होते ही जिले के सभी कांग्रेसी एम०एल०एम० तथा अधिकांश नेता इन्दिारा कांग्रेस में सम्मिलित हो गये। कई बार कुछ लोगो ने इन्हें अध्यक्ष पद से हटाने की चेष्टा भी की परन्तु इनकी संगठन शाक्ति और कर्मठता के आगे झुकना पड़ा। श्री परमात्माशरण श्री परमात्माशरण सिंह का जन्म गाजियाबाद के एक प्रतिष्ठित वैश्य अग्रवाल परिवार में नवम्बर 1911 हुआ था। पिता स्व० लाल किशनलाल नगर के रईस व सम्भान्त व्यक्ति थे। वही से 1927 में मैट्रिक पास करने के बाद इन्होंने मेरठ कालेज में प्रवेश लिया। सन 1930 में जब ये बी०ए० का विद्यार्थी थे तभी गांधी के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में प्रेरित होकर छात्रावास में विद्यार्थीयों की एक सभा की कालेज गुम्बद पर तिरंगा झण्डा फहराने का प्रयास किया गया। इससे कालेज के अध्यापकों एवं छात्रों में हड़कम्प मच गया। उसी रात विदेशी कपड़े एकत्रित किये और अगली सुबह झण्डे की प्रार्थना के बाद उन कपड़ों की होली जलाई ऐसा वातावरण देखकर प्रिन्सिपल ने कालेज को अनिश्चित काल के लिए बंद करने व छात्रावास को 24 घण्टों में खालल करने का आदेश लगभग 2 माह तक बन्द रहा मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा त्रिपाठी सिंह लल्लन श्री मतीगांधी जी के साथ थे। उनके साथ श्री कमलापति त्रिपाठी तथा श्री बहुगणा भी थे। प्रधानमंत्री को जनपद की स्थिति से ठाकुर नौरंग सिंह लल्लन साहब तथा त्रिपाठी जी ने अवगत कराया।

सन 1969 से ही आप नयी कांग्रेस के जिला अध्यक्ष बने। संगठन कांग्रेस का पतन होते ही जिले के सभी कांग्रेसी एम०एल०एम० तथा अधिकांश नेता इन्दिारा कांग्रेस में सम्मिलित हो गये। कई बार कुछ लोगो ने इन्हें अध्यक्ष पद से हटाने की चेष्टा भी की परन्तु इनकी संगठन शाक्ति और कर्मठता के आगे झुकना पड़ा। ठाकुर नवरंग सिंह का निधन 21 नवम्बर 1976 को गुवाहाटी में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक के समय हृदयगति अवरुद्ध हो जाने के कारण हो गया। बैठक स्थगितकर दी गयी। प्रधानमंत्री श्री मतीइन्दिारा गांधी ने तत्काल विशेष विमान द्वारा इनके शव को गोरखपुर भेजने की व्यवस्था कर दी किन्तु खराब मौसम के कारण उड़ान संभव नही थे। अतः गोहाटी मेल से एक सैनिक टुकडी के साथ शव गोण्डा जंक्शन लाया गया। मार्ग में पड़ने वाले प्रत्येक जिले में

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

इन्हें सलामी दी गयी। गोण्डा से शव बलरामपुर आया न केवल जनपद अपितु प्रदेश के प्रमुख कांग्रेसी जनों, गणमान्य व्यक्तियों और अधिकारियों ने इस लौह पुरूष के शव पर माल्यापर्ण कर भावभीनी विदा ईदी।

श्री परमात्माशरण सिंह का जन्म गाजियाबाद के एक प्रतिष्ठित वैश्य अग्रवाल परिवार में नवम्बर 1911 हुआ था। पिता स्व० लाल किशनलाल नगर के रईस व सम्भान्त व्यक्ति थे। वही से 1927 में मैट्रिक पास करने के बाद इन्होंने मेरठ कालेज में प्रवेश लिया । सन 1930 में जब ये बी०ए० का विद्यार्थी थे तभी गांधी के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में प्रेरित होकर छात्रावास में विद्यार्थीयों की एक सभा की कालेज गुम्बद पर तिरंगा झण्डा फहराने का प्रयास किया गया। इससे कालेज के अध्यापकों एवं छात्रों में हड़कम्प मच गया। उसी रात विदेशी कपड़े एकत्रित किये और अगली सुबह झण्डे की प्रार्थना के बाद उन कपड़ों की होली जलाई ऐसा वातावरण देखकर प्रिन्सिपल ने कालेज को अनिश्चित काल के लिए बंद करने व छात्रावास को 24घण्टों में खालल करने का आदेश लगभग 2 माह तक बन्द रहा मेरठ जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा रू अगस्त 1930 में इन्हें हापुड जाकर आंदोलन का नेतृत्व सम्भालने का आदेश मिला। वहां शराब व विदेशी वस्त्रों की दुकान पर धरना देने के अपराध में आपको 28 अगस्त 1930 को गिरफ्तार करके मेरठ जेब भेज दिया गया और उसी दिन मुकदमा कायम करके इन्हें 6 मास की कठोर कारावास की सजा सुना दी। 8 फरवरी 1931 को सजा की अवधि समाप्त होन पर ये मेरठ जेल से रिहा कर दिये गये। सन 1941 में नई दिल्ली में एक प्रतिष्ठित फर्म में ये उच्च पदाथि कारी रहे। गांधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने के लिए इन्होंने अप्रैल 1941 में नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इस जुर्म में ये फिर गिरफ्तार कर मेरठ जेल भेज दिये गये जहां से लगभग 2 माह बाद फिर अन्य सत्याग्रहियों के साथ रिहा हुए। आपको 1939-40 में कुछ समय के लिए नेताजी सुभाषचन्द्रबोस के सीनियर में भी रहकर काम करने का शुभअवसर मिला था।

सन 1956 में गाजियाबाद छोड़कर ये परिवार सहित बलरामपुर आये यहां राजनीतिक एंव समाजिक गतिविधियों में बराबार सक्रिय भाग लेते रहे। इन्हें प्रादेशिक एंव केन्द्रीय पेंशन मिलती है। आपके ज्येष्ठ पुत्र राजीव कुमार भगवती सिंह बलरामपुर में व्यापार करते हैं। उन्हीं के साथ आपे पत्नी सहित जीवन व्यतीत कर रहे है। श्री पाटन लोहार श्री पाटन आत्मज गया प्रसाद लोहार ग्राम रसूलुपुर के निवासी थे। आपने भारतछोड़ो आंदोलन के दौरान सन 1942 में 6 मास कैद तथा 100 रूपये जुर्माने की सजा पायी थी। श्री प्रभुनाथ शुक्ल, श्री प्रभुनाथ शुक्ल

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आत्मज नागेश्वर शुक्ल, ग्रामरामपुर खगई जोत के निवासी है। ये भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 1942 में एक वर्ष तक नजरबंद रहे। श्री फकीर आत्मज खुल्लु कुर्मी ग्राम गनेशपुर के निवासी है आपकों व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन के दौरान 1941 में 6मास कैद तथा 35 रूपये जुर्माने की सजा हुई। श्री बचऊ उर्फ बच्चु आत्मज महादेव हलवाई ने नया बाजार बलरामपुर नगर के निवासी है आपको सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1932 में 60 रू सहित 6 मास कैद की सजा हुई थी। श्री बदल आत्मज जयपाल पासी बलरामपुर के निवासी है आपके सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1932 में 6 मास कैद और 50 रू जुर्माने की सजा पायी थी। श्री बलदेव प्रसाद सेनानी आत्मज महोदव प्रसाद का जन्म बलरामपुर के नौ शहरा मुहल्ले में एक कायस्थ परिवार में हुआ था ये बाल्यावस्था में ही चुस्त, चंचल तथा नेतृत्व तथा प्रतिभा से सम्पन्न थे। हाई स्कुल परीक्ष उत्तीर्ण करने के पश्चात छात्र जीवन में ही इनकी राजनीतिक गतिविधियां इतनी बढ़ गयी थी कि अत्याधिक व्यस्ता से इण्टर की परीक्ष में सफल न हो सके। इन्होंने राम प्यारे तिवारी के संपर्क में रहकर अपना पूरा समय राष्ट्रीय आंदोलनों में देना शुरू किया परिणामतः बलरामपुर राजद्वारा नौकरी से अनिवार्य अवकाश दे दिया गया। सन 1941 मे व्यक्तिगत सत्याग्रह में इन्हें 9 मास की कड़ी कैद तथा 10 रूपये जुर्माना की सजा मिली। सन 1942 में भी भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत में 14मास नजर बंद रहे। सन 1942 से 47 तक आप जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। 11 जनवरी 1945 से 12 फरवरी 45 तक आपको गांधी जी के साथ रहने का सौभाग्य मिला। सेवाग्राम आश्रम वर्धा से आपकी नियुक्ति उन्नाव जिले में बाबा मंजूर अली सोख्ता के आश्रम में समय ग्राम सेवा का प्रशिक्षण देने के लिए हुई सन 1953 से दिसम्बर 1964 तक ये बलरामपुर आदि कई रचनात्मक संस्थाओं के आप संस्थापको में से थे। श्री बलभद्र नाथ पं० शीलता प्रसाद ग्राम बरगदवा, बलरामपुर के निवासी है। आपने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1930 में 6 मास कड़ी कैद तथा 100 रू० जुर्माने की सजा पायी। श्री बलभद्र नाथ मिश्र श्री बलभद्र नाथ मिश्र आत्मज कन्हई ग्राम कलवारी बलरामपुर के निवासी हैं। आपने व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के दौरान 1941 में 6. मास कैद तथा 30 रू० जुर्माने की सजा पायी थी। श्री बलभद्र प्रसाद शुक्ल श्री बलभद्र प्रसाद शुक्ल आत्मज त्रिभ्वुनदत्त शुक्ल मो० टेढ़ी बाजार बलरामपुर नगर के निवासी थे। सन 1929 में गांधी जी के बलरामपुर आगमन पर मो० अहमद जमा खां महाशय भगवती प्रसाद उं०

रामप्यारे तिवारी आदि से प्रभावित होकर ये कांग्रेस केकमठ सिपाही बन गये। व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण 1931 में इन्हें दस मास की सजा हुई थी।

भारत छोड़ो आंदोलन के सिलसिले में भी इन्होंने 9 अगस्त 1942 से जुलाई 1945 तक नजरबंदी की सजा काटी। आप अनेक वर्षों तक प्रानतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे सन 1942 में आप बलरामपुर क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर विधान सभा के सदस्य चुने गये। अपनी सादगी ईमानदारी और कर्मठठा के लिए इस दिवंगत सेनानी को आज भी लोग श्रद्धा सेस्मरण करते है।

श्री बालमुकुन्द आत्मज राम अधीर बलरामपुर के निवासी है। आपने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1931 में 2 मास कैद तथा 50. रू जुर्माने की सजा पायी। इन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के दौरान 1941 में 2 मास की कैद तथा 15 रू जुर्माने की सजा थी। श्री बालेश्वर श्री बालेश्वर आत्मज कल्पू ग्राम सेखुईया, बलरामपुर के निवासी है। आपने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1932 में 6मास कैद तथा 50 रू जुर्माने की सजा पायी थी। इन्हें 6मास कैद तथा 30 जुर्माने की सजा दूसरी बार हुई थी। श्री अब्दुल हफीजखां श्री अब्दुल हफीज खां पुत्र फजल खां का जन्म 1922 ई0 में बलरामपुर नगर के मोहाल्ला बलुआ में फजल खां पठान के घर हुआ था। बचपन से ही ये इनक्लाबी तबियत के रहे। आपके मामा मुस्तफा खां बलरामपुर स्टेट के फौज में हवलदार के पद पर थे। एक दिन अब्दुल हफीज खां बलरामपुर स्टेट के फौज में हवलदार के पद पर थे। एक दिन अब्दुल हफीज खां और इनके भाई अब्दुल करीम पुत्रगण अब्दुल गनी खां फौज के ब्रिगेडियर से मिलने पहुंचे। ब्रिगेडियर ने कहा कि ये लड़के अच्छी कद काठी के हैं इनको फौज में क्यों नही भेज देते। बात आई गयी हो गयी। एक दिन इन लड़कों को पता चला कि ब्रिगेडियर साहब ट्रेन से लखनऊ जा रहे हैं। ये लोग भी उसी ट्रेन से सवार हो लिये। आगे किसी स्टेशन पर ब्रिगेडियर के सामने जाकर उन्हें सलाम किया पूंछने पर बताया कि आज हमें ले चलकर फौज में भर्ती करा दीजिये। ब्रिगेडियर ने जानना चाहा कि आपने मां बाप से आज्ञा ले ली इन्होंने हां भर दिया। जो सच नहीं था। इस प्रकार इन्हें 1940 में लखनऊ में अंग्रेजी फौज में भर्ती होकर रावलपिंडी ट्रेनिंग के लिए भेज दिये गये। रावलपिंडी से पूना भेजे गये जहां जर्मनी के मोर्च पर भेजे जाने वाले नौ सैनिकों में हाफिज खां भी किट सहित तैयार थे। जहाज पर बैठकर जर्मनी जाने का मौका ऐन वक्त पर इन्हें न मिल सका। क्योंकि किसी भूलवश लिस्ट में इनका नाम ही छूट। इन्होंने बड़ी मिन्नते

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

की कि मेरे सब साथी जा रहे हैं। श्री अमीर हसन श्री अमीर हसन उर्फ छोटकऊ आत्मज श्री रियासत अली बलरामपुर के मोहल्ला पुरैनिया तालाब में 1866 ई0 में पैदा हुए। जबये केवल 26 वर्ष के थे।

सर्व श्री मोलवी अहमद जमा खां महाशय भगौती प्रसाद, महाशय बाबूराम खुददर महराज व चुन्नीलाल जी के प्रोत्साहन से महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन में भाग लेने हेतु कांग्रेस में सम्मिलित हुए। इसी बीच रियासत बलरामपुर के मैनेजर कुंवर जसवीर सिंह ने इनके पिता व खानदान वालों पर दबाव डाला कि वे लोग कांग्रेस से पृथक हो रू जाये अन्यथा सारीसम्पत्ति जब्त कर ली जायेगी और पटटे आदि मंसूख कर दिये जायेंगे। परन्तु तमाम धमकियों तथा अर्थिक हानि के बावजूद भी अडिग रहे। रियासत में मिलने वाली इनकी सारी सुविधाए छीन ली गयी। सन 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का नारा लगाने पर ये धारा 1स29 डी०आई०आर० के अन्तगत सिक्योरिटी प्रिजनर की हैसियत से दिनांक 16.08.42 से 12.12.42 तक तककारावास में बन्द रहे। श्री अली सरदार जाफरी डा० अली सरदार जाफरी का जन्म 29 नवम्बर 1913 को बलरामपुर गोण्डा में हुआ। आपके पिता का नाम सं० जाफर तैयार जाफरी था। आपके बाबा दादा सन 1856 में भरतपुर राजस्थान से आकर बलरामपुर में आवाद हो गये। 1933 में आपने बलरामपुर से हाई स्कूल से पास किया। कविता लिखने का शौक आपको हाईस्कूल में पढ़ते समय ही पैदा हो गया। इण्टर मीडिएट की शिक्षा के लिए आप मुस्लिम युनिवर्सिटी अलीगढ़ पहुचे। वहां शायरों की सोहबत मिली जिससे आपने कौमी नज्में, सर्मायादारी के खिलाफ और मजदूरों में बेदारी पैदा करने वाले नज्में, लिखना शुरू किया। एक हड़ताल करने के सिलसिले में अलीगढ़ विश्वविद्यालय से निकाल दिये गये फिर आपने एंगलो अरेबिक कालेज -दिल्ली से बी०ए० किया तत्पश्चात लखनऊ विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम0ए0की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके अन्दर किशोरा वस्था से ही पूजीवाँद तथा अंग्रेजी ताना शाही के विरूद्ध विद्रोह की भावना रही। आपत्तिजनक गतिविधियों के कारण सन 1941 में आप कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर बन गये और जिससे इन्हें पुनः दो बार जेल जाना पड़ा। इसी के साथ इनकी शायरीकी शोहरत का दौर शुरू हुआ। आपने बम्बई को अपना कर्म क्षेत्र बनाया। यहां वे अभी तक सुजनरत है।1 निष्कर्ष -रू उपर्युक्त स्वतंत्रता सेनानियों के अतिरिक्त श्री ब्रह्म दत्त मिश्र, श्री भवानी शरण,श्री मंगल सिंह,आर्य श्री मथुरा,श्री मिश्रीलाल, श्री राजपाल सिंह,श्री राम दत्त तिवारी,श्रीराम पलटन,श्रीराम प्यारे तिवारी, श्री राम मनोरथ, श्री राम रंग सिंह,श्री राम राज,श्री राम लोटन

आर्य,श्री रूप नारायण, श्री बंसराज सिंह,श्री वीरे,श्री शंभू दयाल श्रीवास्तव,श्री शिवदयाल श्रीवास्तव,श्री हरि कृष्ण गुप्ता,श्री हरी बाबू इलियास मलिक,श्री विद्याधर शाही,श्री परमात्मा शरण, श्री भगवती प्रसाद, श्री गिरधारी लाल, श्री पूरणमल जैन,श्रीमती सरस्वती देवी,श्री शोभाराम, श्री श्याम लाल शिल्पकार,श्री संत बक्स सिंह, श्री राम आदि ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी।

निष्कर्ष-

1857 की सशस्त्र क्रांति भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया। यह क्रांति न केवल एक सैन्य विद्रोह थी, बल्कि एक व्यापक जनआंदोलन के रूप में उभरी, जिसमें विभिन्न वर्गों, समुदायों और क्षेत्रों ने अपनी-अपनी भूमिका निभाई। इस शोध पत्र में बलरामपुर क्षेत्र की भूमिका का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि यह क्षेत्र प्रमुख क्रांति स्थलों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं रहा, फिर भी इसकी रणनीतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक महत्ता को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

बलरामपुर में तत्कालीन जागीरदारों, किसान वर्ग और सामान्य जनता में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष व्याप्त था। यद्यपि इस क्षेत्र में क्रांति का स्वरूप अपेक्षाकृत शांत और संगठित न दिखाई दिया, तथापि स्थानीय स्तर पर विद्रोह की भावना और ब्रिटिश विरोधी चेतना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यह भी महत्वपूर्ण है कि बलरामपुर के लोगों ने अप्रत्यक्ष रूप से क्रांतिकारियों को शरण, संसाधन और सहयोग प्रदान किया। यह भी सामने आता है कि 1857 की क्रांति केवल मेरठ, कानपुर, झांसी या लखनऊ जैसे बड़े केंद्रों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसकी लहरें छोटे-छोटे क्षेत्रों और जनमानस तक भी पहुँचीं। बलरामपुर जैसे क्षेत्रों का अध्ययन इस बात को पुष्ट करता है कि यह क्रांति एक समग्र राष्ट्रवादी भावना का प्रतीक थी, जो धीरे-धीरे स्वतंत्रता संग्राम का आधार बनी।

संपूर्णता में देखें तो बलरामपुर की भूमिका भले ही प्रत्यक्ष सशस्त्र संघर्ष में सीमित रही हो, परंतु इसकी क्रांतिकारी चेतना, जनसहभागिता और ब्रिटिश विरोधी मनोवृत्ति 1857 की सशस्त्र क्रांति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह शोध पत्र आने वाले अध्येताओं के लिए एक नई दृष्टि और गहराई प्रदान करता है, जिससे स्वतंत्रता संग्राम के स्थानीय पहलुओं को और बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

संदर्भ सूची

1. बक्शी, पवन. (1999). बलरामपुर सारसंकलन. बलरामपुर: सामाजिक एवं शैक्षिक विकास संस्था बलरामपुर.

2. सिंह, जगदेव. (1975). गोंडा अतीत एवं वर्तमान. गोंडा: मुद्रक गुप्ता प्रिंटिंग वर्क्स गोंडा.

3. Gopinath, R. (2010). 1857: A regional movement or a national revolt? New Delhi: Oxford University Press.

4. Hasan, S. M. (1990). 1857 aur Awadh ka sangharsh (in Hindi). Lucknow: Uttar Pradesh Hindi Sansthan.

5. Maitra, K. (1998). Women in the revolt of 1857. Delhi: People's Publishing House.

6. Malik, S. C. (2004). 1857: Vidroh ya swatantrata sangram (in Hindi). Allahabad: Lokbharti Prakashan.

7. Mehta, A. (1957). 1857 ki kranti aur uska prabhav (in Hindi). Varanasi: Vishwavidyalaya Prakashan.

8. Richards, J. F. (1995). The new Cambridge history of India: The Mughal Empire. Cambridge: Cambridge University Press.

9. Savarkar, V. D. (1909). The Indian war of independence: 1857. Bombay: Tata Brothers.

The Asian Thinker